परिशिष्ट-9 चिंतनप्रणाली

१. शास्त्रचिंतन में वृक्ष-वनस्पति

तर्कशास्त्र के गुरत्व निरूपण के प्रसंग में असमवायिकारण कि व्याख्या करते हुए आचार्य मुसलगाँवकर ने आम्रफल का दृष्टांत दिया है। जैसे वृक्ष की ऊपरी शाखा पर स्थित जो आम्रफल है, वह परिपक्व होकर नीचे पृथ्वी पर गिरता है। तब आम्रफल का पृथ्वी के साथ जो संयोग होता है, उसका जनक आम्रफल की क्रिया है, उस क्रिया को ही पता कहते हैं; अर्थात् वृक्ष की टहनी से आम्रफल के विभाग की जनक प्रथम क्रिया है। उस प्रथम क्रिया से लेकर पृथ्वी के साथ संयोग होने तक उस आम्रफल की जितनी क्रियाएँ पैदा होती हैं वे सभी क्रियाएँ अधःसंयोग के अनुकूल होने से पतन होता है, उसका असमवायिकारण आम्रफल का गुरुत्व ही होता है। उस प्रथम पतन से आम्रफल में वेग उत्पन्न होता है। उस वेग से प्रथम पतन का नाश होकर उस आम्रफल में द्वितीय पतन उत्पन्न होता है। उस द्वितीय पतन से प्रथम वेग का नाश होकर द्वितीय वेग उत्पन्न होता है, उस द्वितीय वेग से द्वितीय पतन का नाश होकर तृतीय पतन उत्पन्न होता है। इस रीति से अधःसंयोग तक पूर्व-पूर्व का नाश होकर उत्तर-उत्तर वेग उत्पन्न होता है। अतः द्वितीय पतन से लेकर अधःसंयोग तक आम्रफल में जितने भी क्रियात्मक पतन होते हैं उनका असमवायिकराण वेग नामक गुण ही होता है। - तर्कभाषा, पृ. ४२६

(क) न्यायसूत्र : फल

न्यायसूत्र 'प्रवृत्ति दोष जनितऽर्थ फलम्' के वात्स्यायन भाल्य में 'फल' की परिभाषा की गयी है-सुख और दुःख का अनुभव करना फल है। सुख फलवाला कर्म है और दुःख फलवाला भी। वह फल शरीर,इ ंद्रिय, विषय और ज्ञान होने पर होता है। अतः शरीर आदि सहित फल माना गया है। इसीलिए यह सब प्रवृत्ति और दोषों से उत्पन्न फल होता है। यह फल बार-बार प्राप्त करके छोड़ना होता है और बार-बार प्राप्त करने योग्य होता है। इसके त्याग और ग्रहण की समाप्ति या अंत नहीं है। वस्तुतः यह संसार फल के त्याग और ग्रहण के प्रवाह के द्वारा वहन किया जाता रहा है।

- न्यायवार्तिक १९२

(ख) कार्यकारण भाव

कार्यकराण भाव तथा प्रतिसंधान की व्याख्या करते हुए न्यायवार्तिक ने शालि-बीज का दृष्टांत दिया है-इसलिए विज्ञानों के भिन्न-भिन्न होने पर भी कार्य-कारण भाव से ही बीज के समान प्रतिसंधान हो जाता है-जैसे कि शालि के बीज के पश्चात् जो अंकुर उत्पन्न होता है, उसका शालि के बीज से होनो के कारण शालि की शक्ति का अनुसरण करना निश्चित है। तत्पश्चात् पृथिवी आदि महाभूतों से उपकृत होकर अग्रिम काल में शालि का बीज ही उत्पन्न होता है, यव का नहीं क्योंकि वह अंकुर यव बीज के निमित्त से नहीं होता। - वही १४९

(ग) कदंब मुकुल न्याय

कदंब पुष्प की कली जब विकसित होने लगती है तब उसके बीज-कोष में चारों ओर छोटी-छोटी अनेक पंखुड़ियाँ तीसरा वृत्त बनाकर विकसित होती है। इस क्रम से भिन्न-भिन्न वृत्त बना कर अनेक पंखुड़ियों का संपूर्ण कदंब पुष्प विकसित हुआ दिखाई देता है। उसी प्रकार किसी जगह वाद्य बजने से प्रथम शब्द उत्पन्न होता है तदनंतर वह शब्द अपनी परिधि के

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

चारों ओर अपने जैसे अनेक शब्दों को उत्पन्न करता है, ये शब्द भी अपनि परिधि के चारों ओर अपने जैसे भिन्न-भिन्न अनेक शब्दों को उत्पन्न करते हैं। शब्द की इस प्रकार की उत्पत्ति को कदंब मुकुल न्याय कहा जाता है। - तर्कभाषा ४३९

२. कबीर के तत्त्वचिंतन में बीज-वृक्ष के बिंब

वै बिरवा चीन्हे जो कोय, जरा मरण रहित तन होय।
बिरवा एक सकल संसारा, पेड़ एक फूटल तीन डारा।
मध्य की डार चार फल लागा शाखा पत्र गिन को वाका।
बेलि एक त्रिभुवन लिपटानी बाँधे ते छूटे नहिं ज्ञानी।
कहहिं कबीर हम जात पुकारा पंडित होय सो ले बिचारा।
- बीजक : शब्द ५३, पृ. १२९

मैं कासों कहौं को सुनें को पतियाय, फुलवा के छुवत भँवर मरि जाय।
जोतियै न बोइयै सींचियै न सोय, बिनु डार बिनु पात फूल एक होय।
गगन मंडल बिच फूल एक फूला, तर भौ जार ऊपर भै मूला।
फुल भल फुलल मलिनि भल गाँथल फुलवा बिनशि गौ भँवर निरसल।
कहहिं कबीर सुनौ संतौ भाई, पंडित जन फुल रहल लोभाई।
- वही : शब्द ६३, पृ. १४९

बिरहुली

आदि अंत नहिं होत बिरहुली नहि जर पल्लव डार बिरहुली।
निशि बासर नहिं होत बिरहुली पौन पान नहिं मूल बिरहुली।
ब्रह्मादिक सनकादि बिरहुली कथि गये योग अपाल बिरहुली।
मास असारे शीतल बिरहुली बोइन सातौ बीज बिरहुली।
नित गोड़े नित सींचै बिरहुली नित नव पल्लव डार बिरहुली।
फूल एक भल फलल बिरहुली फूलि रहल संसार बिरहुली।
सो फुल लोढ़े संत जन बिरहुली बंदि के राउर जाय बिरहुली।
सो फल बंदे भक्त जना बिरहुली डसिगौ बैतल साँप बिरहुली।
विष की क्यारी तुम बोयहु बिरहुली अब लोढ़त का पछिताहु बिरहुली।
जन्म-जन्म मम अंतरे बिरहुली फल एक कनयर डार बिरहुली।
कहैं कबीर सच पाव बिरहुली जो फल चाखहु मोर बिरहुली।
- वही : बिरहुली, पृ. ३५४

साखी

धुँधली भर के बोइये उपजा पसेरी आठ।
डेरा परा काल का साँझ सकारे जात। - वही, सा. १३५, पृ. ४५०
सेमर केरा सबुना छिवले बैठा जाय।
चोंच संवारौ सिर धुनै ई उस ही को भाय। - वही, सा, १६३, पृ. ४६६

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

ये गुनवंती बेलरी तव गुण वरनि न जाय।
जर काटे ते हरियरी सींचे ते कुम्हलाय। - वही, सा. २१७, पृ. ४८७
बेल कुढंगी फल बुरौ फलवा कुबुधि बसाय।
और विनष्टी तूमरी तेरौ सरौ पात करुवाय। - सा. २१८, वही
सुर हुर पेड़ अगाध फल पंछी मरिया झूर।
बहुत जतन कै खोजिया फल मीठा पै दूर। - ३३७, पृ. ५५१

- मूल बीजक टीका सहित खेमराज श्रीकृष्ण दास, बंबई, वि. २०५२

३. प्रतीक

प्रतीक	प्रतीकार्य
अपर्णा (लता)	शिवा
अश्वत्थ	विश्ववृक्ष
आम का पेड़	मेरुदंड
कदंब	विश्ववृक्ष
कनक लता	राधा
कमल	सृष्टि का मिथक, षट्चक्र, सहस्रार
कमलिनी	आत्मा
काँटा	अज्ञान, दुःख
काँटोवाली बेल	बुद्धि
क्षेत्र (खेत)	प्रकृति, देह, योनि (स्त्री)
क्षेत्रज्ञ (किसान)	पुरुष, मन, आत्मा, परमात्मा
पत्ता	संसार
पीपल के पत्ते	मन
फल	अमृत बिंदु, संतान, परिणाम, पुरुषार्थ
फूल	चैत्न्य, ज्योतिपिंड
बीज	परमात्मा, आत्मा, प्रकृति, कर्म, इच्छा, वासना कारण, बिंदु परावाक्, पाप, पुण्य, वीर्य
भौंरा	संकल्प-विकल्प
मालिन	कुंडलिनी, भ्रांत बुद्धि
माली	काल, मृत्यु
मूल	परमात्मा
वृक्ष	पुरुष, संकल्प, विश्व, चित्त, देह
श्यामतमाल	श्रीकृष्ण
साँपिन	कुंडलिनी
स्थाणु (ठूँठ)	शिव

४. उपमान

उपमेय	**उपमान**

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

संसार	सेमर का फूल काँटों की झाड़ी रैन बसेरा
सूक्ष्म तत्त्व	पुष्पगंध
क्षण भंगुर जीवन	ओस का मोती कली
सांसारिक संबंध	वृक्ष से टूटते पत्ते
ईश्वर की व्यापकता	मेहँदी में लाली तिल में तेल पुष्प में सुगंधि
प्रकृति पुरुष	सींक और मूँज

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.